# जो तितलियों के पास है

संजीव बख्शी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

हिन्दी काव्य के क्षितिज पर बड़ी विनम्रता व सहजता के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए रचनात्मक संघर्ष जारी रखे संजीव बख्शी का कवि इस पड़ाव के आते-आते युवकोचित तेवर से आगे बढ़ प्रौढ़ता का आभास देने लगा है। जो उम्रगत बदलाव की स्वाभाविक देन ही नहीं अपितु अपनी जातीय़ परंपरा के काव्य से जीवंत जुड़ाव स्थापित कर अपने समय की काव्यात्मक प्रवृत्तियों, काव्य चरित्रों के आत्म संघर्ष व जनपदीय चेतना के साथ-साथ वैश्विक परिदृश्यों, गतिविधियों के प्रति सजग दृष्टि रखते हुए भविष्य की आहट को सुनने समझने की कवियोचित ललक का प्रतिफलन है।

'जो तितलियों के पास है', संजीव का तीसरा काव्य संग्रह है जिसमें एक ओर युगीन द्वंद्वों के प्रति सतत चिंतनशील रहते हुए कवि आम आदमी की सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक व आर्थिक अवस्थिति को काव्यात्मक परिप्रेक्ष्य में सामने रखता है तो दूसरी ओर दफ्तर में खटते दीनू काका, रिक्शा चलाता युवक, बर्तन माँजने वाली बती, बकरी चराता सांवला लड़का व बच्चों को कहानी सुनाती बुआ ... जैसे काव्य चरित्र जीवन के उजले पक्षों के लिए अनवरत जूझते हुए नजर आते हैं।

संग्रह की विभिन्न कविताएँ संजीव बख्शी को बस्तर अंचल के आदिवासियों के श्रम, संघर्ष व साहस के सौंदर्य को सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त करने वाले कवियों की पांत में अलग पहचान देती है। दरअसल संजीव बख्शी सौंदर्य के प्रति रूढ़ग्रस्त नहीं है। अंतहीन शोषण गाथाओं और दुख-पीड़ा का भोक्ता बन रहे आदि जनों की ओर से वे जिरह करते हुए कहते हैं—

*(अगले फ्लैप पर जारी)*

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आदरणीय श्री

भाई अग्निशेखर जी

को उनके 'सूत्र सम्मान'

के लिए बधाई के

साथ-

'सप्रेम'

[illegible]

25/12/06.

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 4967
Dated 27.12.2023

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# जो तितलियों के पास है

संजीव बख्शी

मेधा बुक्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

*प्रकाशक*
मेधा बुक्स
एक्स-11, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032
✆ 22116672

*मूल्य*
100.00

© संजीव बख्शी

*प्रथम संस्करण*
सन् 2004

*आवरण*
तुषार वाघेला

*मुद्रक*
अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

JO TITLION KE PAAS HAI
*by*
Sanjeev Buxy

ISBN 81-8166-037-4

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

''रजत कृष्ण, विजयसिंग, त्रिजुगी
नासिर, बसंत त्रिपाठी और एकांत
श्रीवास्तव को स्मरण करते हुए।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# अनुक्रम


| | |
|---|---|
| जीवन | 7 |
| भूलन कांदा | 8 |
| पुरानापन | 9 |
| मल्टीपरपज़ बैग | 11 |
| रिक्शे वाला | 13 |
| बुआ सुनाती थी | 14 |
| हैलो (एक) | 15 |
| हैलो (दो) | 16 |
| हैलो (तीन) | 17 |
| हैलो (चार) | 18 |
| हैलो (पाँच) | 19 |
| पहाड़ी गाँव के लोग | 20 |
| सीढ़ियाँ | 22 |
| सूरजमुखी | 24 |
| अद्‌भुत-रंग | 25 |
| लौट जाना बती के साथ | 29 |
| आकाश नगर | 34 |
| गहना | 37 |
| सोना-चांदी, हीरा-मोती | 39 |
| क्या ढूंढ रहे हैं जनाब | 41 |
| उन्हें देखो | 43 |
| ये मुर्गियाँ | 45 |
| जमाना बदल गया है | 46 |
| एक ट्रक सामान और विनोद कुमार शुक्ल की किताब | 51 |


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu


| | |
|---|---|
| अंकलहा, दुकालू, लेड़गा | 54 |
| अद्भुत छुअन | 57 |
| ये लड़कियाँ | 58 |
| भयभीत हूँ | 60 |
| उद्योग आ रहा है | 61 |
| मेरे हिस्से का आसमान | 66 |
| बड़ा बाबू | 67 |
| दमक जाता है चेहरा | 68 |
| बकरी चराने वाला बच्चा | 69 |
| इनके रास्ते | 72 |
| पहाड़/हाथी/चाँद/मामा | 75 |
| आसमान बंद है | 77 |
| उधार के एक हजार | 79 |
| एक चिड़िया दरवाजा खटखटाती है | 82 |
| यह चार चक्कों का रथ है | 84 |
| पाँच मिनट छुट्टी बिताने के लिए | 36 |
| फसल की तैयारी है | 89 |
| पूरी हो गई बात | 91 |
| तब और अब | 92 |
| काला-पीला | 93 |
| चिड़ियों की खुशी के मुकाबले | 95 |


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## जीवन

एक छांव हिली,
एक रंग उड़ा,
कम हुई एक दीपक की
रोशनी।
पहाड़ से लौट आई
प्रतिध्वनि ने दिया उत्तर
प्रश्न था जीवन।

लाखों करोड़ों जुगनू
नियान जगमग उत्तर के साथ
ढूंढते रहे प्रश्न
उन्हें प्रश्न नहीं मिला।

छांव अभी बाकी है,
पूरी तरह नहीं उड़ा है रंग,
टिमटिमा रहा है दीया
कुछ तेज हुआ अभी अभी,
प्रतिध्वनि की गुंजन
आकाश में अभी शेष है,
छटने को है बादल
सूरज अभी डूबा नहीं।


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# भूलन कांदा

कहता है संपत
वह जंगल से आया है
शहरी सोचते हैं
भोले भाले हैं जंगली
भोले हैं सो भटक जाएंगे
भटक जाएंगे कार्यालय-कार्यालय,
थाना-थाना,
कचहरी-कचहरी,
अस्पताल-अस्पताल।

शहरी क्या जाने
जंगल में होता है भूलन कांदा
पड़ गया पैर भूलन पर,
नहीं दिखता फिर
घर जाने का रास्ता
दिखता है सब ओर जंगल ही जंगल
तब अक्सर गरवा चरवाहा अंगुली पकड़
दिखाता है रास्ता
कहता है संपत और जोर से हँसता है
'यहां कहां गरवा चरवाहा'।


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# पुरानापन

कितना जरूरी है किसी का
पुराना होना

देखिए मेरे कपड़े,
इन्हें कितना अच्छा आता है
पुराना होना

कहते हैं
समय ने सिखाया है सबको

शास्त्रीय संगीत से भी कठिन हैं
पुराना होना

लो कोई कह दें
एक दिन और पुराना हो जाओ,
मुश्किल हो जाएगा

साधन जुटाने में लगे हैं लोग
कि न हुआ जाए पुराना
किसी तरह

कि आने वाला हर कल भी
हुआ करे आज।



CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मेरे दादा थे
पुराना होने में गर्व था उन्हें

पुरानेपन को सहेज कर रखे हुए थे

चमकदार था उनका
पुरानापन।

काश ऐसा ही हो.... ।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## मल्टीपरपज़ बैग

ट्रेन का सफर है,
सफर का सामान है,
यह मल्टीपरपज़ बैग है,
इसमें रूमाल है, तौलिया है
चादर, साबुन, पीने का पानी, टिफिन
और एक ओर चप्पलें
मोटी पोलीथीन में
बिलकुल अलग।
दादी कहती है यह क्या?
एक ही बैग में
टिफिन भी, चप्पलें भी

एक पीढ़ी का फर्क है।

वह जो कहती है
उसका दोष नहीं
मोटी पोलीथीन से
सब कुछ हो जाता है अलग

वह नहीं जानती।

मेरे ठीक सामने की सीट पर


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नवयुवक ने बैग से निकाली चप्पलें,
मैं दंग रह गया
इस कदर साफ और मुलायम
लगा उसे चूम लूँ।

युवक ने उसे वाकई चूमा
और पहिन लिया
न पोलीथीन न और कुछ।
मैंने देखा आईने में अपना चेहरा
देखा सफेद होते बालों को।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# रिक्शे वाला

ढोता है
बोझ।

बोझ?

न····न····कहता रिक्शे वाला

"सवारी तो दाताराम है,
पालन कर्ता,
भगवान।
अपने गमछे से सीट साफ कर
बैठा कर सवारी,
जब मारता हूँ पैडल
हमेशा एक-सा महसूसता हूँ भार,
परिवार का भार।"

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# बुआ सुनाती थी

बुआ सुनाती थी
कहानियाँ,
बचपन की कहानियाँ
उगाती थी उन कहानियों में
असली चांद।

मैं नहीं उगा पाता

मैं सुनाता हूँ कहानियाँ
बच्चों को
बच्चे मेरी ओर देखते हैं
जैसे मैं कम्प्यूटर हूँ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## हैलो (एक)

दूरी की समस्या हो गई दूर,
सारे के सारे दूर
आ गए पास
अंगुलियों पर है दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता,
रूस, अमेरिका।

आंख में एक तिनका घुस गया है,
डाक्टर/इलाज/दवा
सब है पास
आंख है दूर।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# हैलो (दो)

एक हाथ से दूसरे हाथ के बीच
अंधकार है,
अंधेरी सुरंग है
बीच में पड़ते हैं
बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता,
रूस, अमेरिका,
लंदन⋯और उपग्रह
हाथ तो फिर भी आपका ही है।
संकोच क्यों?
कहिए हैलो 'हाथ' जी।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# हैलो (तीन)

अब क्या कीजिएगा
कहीं नजदीक जाकर,
दूर जाइए
सारे दूर अब आ गए हैं पास।

दूर है 'मीठा',
दूर है 'मुलायम',
'सुरक्षित',
'भरोसेमंद' हैं दूर।



CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# हैलो (चार)

जितनी हो दूरी,
पास का आनंद है उतना।

दरअसल
पास के मायने अब पड़ोस नहीं
पास के मायने
अब हो गए हैं 'दूर'।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## हैलो (पाँच)

पास यानी भाई नहीं, बहन नहीं,
माँ, बाप नहीं,
आप खुद भी नहीं।
अपने दिल से पूछिए
पास है 'उपग्रह',
कहिए उपग्रह से 'हैलो'।


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## पहाड़ी गाँव के लोग

पहाड़ी गाँव के लोग
दूर-दूर जंगल ही जंगल
नून-तेल दूर,
डाकघर दूर,
पहाड़ी की तराई में साप्ताहिक बाजार,
पैदल दस कोस।

पहाड़ी गाँव के लोग
चाहते थे
विकास,
चाहते थे रात की रोशनी,
चाहते थे
गाँव में शहर का एक कोना,
गाँव में सिनेमा।

संकल्पित थे कि
कर देंगे दूर
बाधाओं को जो
बिजली के रास्ते आएँगी

'यह चाहत
बन गई मुसीबत'
दोष इनके चाहत में नहीं थी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

भोले थे
यह उनका दोष था।

काट दिए पेड़
पहाड़ी गाँव के लोग थे
भेज दिए गए जेल।

उनके भोलेपन को भला क्या पता
शहर का जेल,
जेल की सफाई,
जेल का खाना,
जेल की बिजली,
बिजली ही बिजली,
इतनी कि
रात लगे दिन
क्या बिजली!
क्या बिजली अहा!


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## सीढ़ियाँ

लोग चढ़ रहे हैं,
उतर रहे हैं

साँप सीढ़ी का खेल है

कहीं सीढ़ी ही सीढ़ी,
कहीं साँप ही साँप

कहीं तो सीढ़ी से उतर रहे हैं लोग,
कहीं चढ़ रहे हैं साँप को पकड़कर

लोग चढ़ रहे हैं,
उतर रहे हैं

रंग-रंग की सीढ़ियाँ,
रंग-रंग के साँप

सीढ़ियाँ हैं लम्बी/सीढ़ियाँ हैं छोटी
साँप है लम्बी,
और लम्बी
चौबीस घंटे भीड़ है।

क्या आप नहीं गिन रहे पायदान
या एक अदद छोटी सी सीढ़ी
जेब में रखते हैं श्रीमान।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

लिफ्ट भी सीढ़ी है,
साँप भी लिफ्ट है
कोई नहीं ऊब रहा सीढ़ी चढ़ते,
कोई नहीं थक रहा।

औसत लम्बाई
सीढ़ियों की कुछ
घट रही है
कुछ कमजोर भी हुई है सीढ़ियाँ।
कई बार गिरा यहाँ यह आदमी
रुका नहीं
ठहरा नहीं

क्षण भर ठहरे तो
कोई बात करें।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## सूरजमुखी

नेशनल हाईवे के
किनारे
खेत है,
खेत में सूरजमुखी

सरकारी मदद से खड़े
ये सूरजमुखी

सूरजमुखी का चेहरा
सूरज की ओर नहीं है,
सड़क की ओर है

सड़क पर खड़ी हैं
कारें/चमचमाती कारें
और उजले-उजले कपड़ों में लोग

सूरजमुखी को समझाईश दी जा रही है
पूछा जा रहा है
कोई शिकायत तो नहीं मिट्टी से,
सूरज से कोई शिकायत तो नहीं

सूरजमुखी चुप है
कतारबद्ध सूरजमुखी
सूरज हँस रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# अद्‌भुत-रंग

हाँ तो जनाब
आपकी इस खूबसूरत पेंटिंग में
एक खूबसूरत रंग नहीं है

उस रंग का नाम नहीं
वर्ना कह देता उसका नाम
और छुट्टी
बाजार में बिकता भी नहीं
यह रंग

उसके बिना
अधूरी सी दिखती हैं पेंटिंग्स

यह अलग बात है कि
बहुत लोग,
बहुत क्या अधिकांश
उसे पूर्ण मान लेते हैं
जीवन तो इसमें है
पर जीवन का एक रंग.... ।

पेंटिंग्स के लिए,
उसके पूर्ण होने के लिए
तर्क दिए जा सकते हैं अनेक


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सिर्फ एक रंग के बिना
क्यों हो सकती है
एक पेंटिंग अधूरी

यह कि
यह पेंटिंग हो सकती है
अपने आप में अलग
पर यह बात नहीं,
यह जो रंग है,
वह रंग नहीं।

एक रंग
जो रंग नहीं
मैं उसकी बात कर रहा हूँ,
मैं पहेलियाँ नहीं बुझा रहा हूँ

मैंने देखा था यह रंग एक बार
एक आदिवासी कलाकार ने उकेरे थे,
कहाँ से आए थे भला

वह जाता
साप्ताहिक बाजार
पीछे-पीछे एक दिन चला गया मैं

पैदल चौदह मील,
पहाड़ चढ़ा, नदियों को पार किया,
बाजार घूमता रहा पीछे-पीछे
मैं चलता रहा, दौड़ता रहा
घर से लाए पपीते बेचे उसने,
ठगा गया
फिर भी प्रसन्न

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

राशन लिया एक सप्ताह का/एक सप्ताह का माटी तेल
लौट आया
चौदह मील, पहाड़-नदी।

हफ्ते के हफ्ते जाता बाजार,
मैं पीछे-पीछे।

साल भर में आया
मड़ई-मेला
मड़ई के नाम से उत्साहित था वह,
नए कपड़े खरीदा था,
नई लाठी,
सिर पर पगड़ी,
उस पर लाल ऊन का गोला
नई साईकिल थी इस बार,
कई-कई बार पोंछ कर
चमकाई गई साईकिल
हर बार पोंछते-पोंछते साईकिल
उसने गुनगुनाया था रिलो
गाया था यह रिलो
पिछली मंड़ई में
साथ गाँव की एक मोटियारिन के
कंठ से कंठ मिलाकर।

कल जाना है
'मंड़ई'

मैं तैयार था
पीछे-पीछे जाने के लिए
मैंने भी एक खास साईकिल खरीदी थी

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

साईकिल पोंछने का उसका अंदाज
कुछ और था,
गुनगुनाने का तो कोई जोड़ नहीं

साथ जाते हुए मंड़ई
मुझे लगा
मैं बहुत पीछे होता जा रहा हूँ

वह रंग चुराते जा रहा था,

मैं ठगा-सा देखता जा रहा था।


Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# लौट जाना बती के साथ

चलो, चलते हैं
लौट कर
वापस
चलते हैं उस रास्ते
जहाँ से सीधे घर पहुँचते हैं।
बचपन का घर,
छत भर चांदनी,
आंगन भर बसंत,
खिड़की भर धूप,
'मन' भर प्यार
बचपन ही बचपन।
लौटना इस तरह अब
यूँ नहीं रहा सहज
लौटने की बात पर
बातें अलग-अलग
कहती है 'बती'
''का लौटना बाबू
गिन रहे हैं दिन अब तो
झुर्रियाँ ही झुर्रियाँ हैं।
जब हँसती है बती
झुर्रियाँ हँसती हैं,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

होती है वह उदास जब
झुर्रियाँ रोती हैं

जैसे सिमट कर आ गई है जान
झुर्रियों पर
न आँख ठीक दिखता
न सुनते कान
पर बताती है वह अपनी उम्र
'तीस'—अभी भी
उसकी मर्जी।
सोलह बताती रही कई बरस,
दादी ने लगाई झिड़की
तब तीस की हुई थी।
कहते बच्चे
एक घड़ी पहन लो बती,
एक कैलेंडर टांग लो घर में
फिर अंदाजा रहेगा उम्र का
ठीक-ठीक।
''मुझे नहीं बढ़ानी उम्र''
कहती बती और हँसी-ठिठोली में
थोड़ी तुतला जाती।
बच्चे खेल करते
बती तीस की,
बती सोलह की।
वह यूँ ही
अनजाने ही लौट जाती।

हमने बांध लिये हैं
मजबूत खूँटे अपने लिए,


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बँधा हुआ है हमारा समय
दंभ ने कर दिए हैं बंद
लौटने के सारे रास्ते
और तो और
हम खुद अपनी तरक्की को लेकर
भ्रम में हैं
तरक्की को बना ली है हमने
उम्र
लौटना ही नहीं चाहते,
फिसल कर भी
आगे ही बढ़ना चाहते हैं।
क्या आपके पास
संगीत है ?
पेंटिंग कोई ? जो
आपने बनाई हो,
कविता ?
या अच्छे जोक्स
जिस पर आप खुलकर हँसते हों
यह जरूर आपकी मदद करेंगे
आप
लौटना चाहते हैं यदि।

बती के पास
ऐसी कोई चीज नहीं
वह बर्तन मांजती घर-घर
लगता वह खुद को मांजती
दिन प्रति दिन
वह बुहारती घर-घर,
आंगन-आंगन।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

वह खुद एक पेंटिंग थी बिलकुल मूर्त,
एक कविता,
एक सुंदर जोक थी,
हँसती और कहती
'तीस' की
यह कहते वह पहले गंभीर होती
और यकायक हँस देती
अपनी ढेर-ढेर
झुर्रियों के साथ
इस हँसी के साथ ही
जैसे लौट पड़ते सबके सब एक साथ—
''क्यों बती?
कितने की आती थी सब्जी?''
फिर क्या था, शुरू हो जाती बती
''क्या जमाना आ गया
एक पैसा की लाती थी सब्जी,
पूरा बड़ा परिवार को
कम नहीं पड़ता''

बात-बात में कहती
''झूठ नहीं बोलती
'एक पैसा'
यह देख लो हिसाब कापी''
और सचमुच ही
हिसाब कापी देखते-देखते
लौट जाते सब
''एक पैसा की सब्ज़ी'',
एक पैसा, बड़े बाबू जेब खर्च,


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

तीन पैसे में कपड़े,
दीपावली के लिए चार आने,
पढ़ाई लिखाई आना-दो-आना''
हिसाब कापी में लिखा था
हिसाब,
हिसाब कापी में लिखा था
ईमान,
उसमें लिखी थी सच्चाई,
संस्कार लिखा था,
उसमें प्रेम लिखा था,
वह सब कुछ था उसमें
जो बुला रहा था
आओ
लौट आओ।


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# आकाश नगर

यह आकाश नगर है
क्योंकि ऊँचाई मे है,
ऊँचे पहाड़ पर
मानो सचमुच आकाश में बसा।

ड्राइंग रूम से देख रहे थे हम
बाहर का नजारा
कि तैरता हुआ एक बादल का टुकड़ा
खिड़की के भीतर हुआ,
सोफे पर पसर गया
देखते ही देखते
बाय-टाटा कहते
निकल गया दरवाजे के रास्ते
हम बाहर देखते रहे दूर तक।
क्षण भर का उसका साथ भला था,
जिसके लिए हम थे आकाश नगर में
अपने दोस्त के घर।

अब तक चित्रों में पाया था
बादलों को इतने नजदीक
कि छू सकूँ
आज जाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

किस तरह वह सोफे पर
धंस कर बैठ जाता है।

कहा मेरे दोस्त ने
अभ्यस्त हैं वे इस कदर इन बातों के
कि जान लेते हैं
बादलों के मिजाज
बादलों के भीतर की गर्मी या ठंडी को।

अक्सर रात में ठहरा बादल
सुबह-सुबह निकल जाता है,
जैसे हो गई थी रात देर
नींद आ गई थी आँखों में।
बादल तो बादल हैं,
बिना सूचना आ जाते हैं कभी भी
न चिट्ठी, न पतरी।

शुरू-शुरू बच्चे, बाट जोहते उनका
सुबह को कैसे दिखता है
घर के भीतर बादल,
शाम/रात कैसे
ड्राइंग रूम में कैसे दिखता है,
किचन में कैसे।

''ये देखो पापा, मेरे हाथ पर बादल''
दौड़ कर आता बेटा
कभी वह टिफिन में
ले आता बादल,
दोस्तों को दिखाने।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कितने तो फोटो खींचे
सबने बादलों के साथ,
पर अब जैसे
खासी जान पहचान हो गई है।
उनकी पत्नी,
दोनों ओर की खिड़की
रात खोल देती है
सोने के पहिले/कहती है
वह ऐसा मेहमान है
जिसे सुबह की चाय
या स्नान के लिए गर्म पानी की
जरूरत नहीं।

आकाश नगर से उतरकर
दोस्त मेरे घर आया एक दिन
परिवार भी था साथ
छत पर था पूरा परिवार
आकाश में दूर
बादलों को निहार रहे थे
सबके सब।
वह बादल—वह बादल।
कितने अच्छे हैं ये बादल वाकई।
बहुत छोटा लगा/इस वक्त
पड़ोसी का पूछना
क्या है मेरे दोस्त की जाति।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## गहना*

वह
घर से निकलती है
जब भी
हाथ में थाली लिए
आँचल में छुपा,
मुसीबत को पढ़ लेती है
पड़ोसन।

वह जानती है
ठीक-ठीक
कब थाली
थाली होती है
कब वह गहना बन जाती है।

साहूकार उसे
उसकी थाली से
पहिचानता है।

गहना छुड़ा
लाती है जब वह
थाली को,

---

* टिप्पणी—छत्तीसगढ़ के गावों में गिरवी रखने को गहना रखना कहते हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नई थाली की तरह
बच्चे उसकी
खुशियाँ मनाते हैं।

गहना में डूब गई है थाली।

मुसीबत में
आँचल में छुपा
अब क्या ले जाएगी वह
घर/आँगन/खेत
खूब जानती है पड़ोसन।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# सोना-चांदी, हीरा-मोती

सोना-चांदी
एक गरीब के पास
थोड़ा भी होना
सब कुछ होना
होता है

थोड़ा भी खोना
सब कुछ खोना।

गरीब का सोना
उसके खून में
अति आवश्यक तत्व सा
मौजूद होता है
उसके घर

'न होना' हो सकता है
उसका हाई ब्लड प्रेशर

ससुराती बिटिया का कष्ट
बेरोजगार बेटे का आक्रोश
या उसका
बेमरम्मत टूटा-फूटा घर।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

हीरे-मोती को
कहानियों में जानता है
एक गरीब किसान

वह जानता है
उसके खेत के धान को
वह हीरे मोतियों में
नहीं बदल सकता

सपने में भी उसे
नहीं दिखते
हीरे-मोती
शायद इसीलिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## क्या ढूंढ रहे हैं जनाब

क्या ढूंग रहे हैं जनाब?
फिर कुछ भूल गए
कहीं रख कर?
कहां है आपकी घड़ी,
चश्मा कहाँ है?
रोज पहिनते हैं
बारह-चौदह घंटे,
कहीं रखते हैं,
भूल जाते हैं।

कब जाएगी
यूँ भूलने की आपकी आदत,
आधी उम्र तो निकल गई इस तरह।

आपकी ही नहीं,
यह एक आम आदमी की
समस्या है
घड़ी को घड़ी के स्थान पर
चश्मा को चश्मा के स्थान पर
रख देने में क्या हर्ज है

थोड़ा समय निकालिए

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

और कर लीजिए प्रेक्टीस
अभी भी कोई हुई नहीं है देर

सवाल चश्मा, घड़ी का ही नहीं,
अपने भाई/पिता जी को भी
रखना है आपको उनके स्थान पर
माँ को भी।

थोड़ा और समय
निकालिए,
कहीं ऐसा न हो
कि आप ढूँढते रह जाएँ/और ढूँढ न पाएँ?
अपने आपको।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# उन्हें देखो

तुम ठगे जा रहे हो
लगातार
बेखबर हो,
तुम्हें पता नहीं कि तुम
ठगे जा रहे हो

कौन देगा तुम्हें
इसकी जानकारी

मांदर की थाप देकर
अपनी जानकारी दे देते हो तुम
सब कुछ नाच-गा कर
बता देते हो।
कौन है बेबाक
इस़ तरह?
तुम तो
ठगा जाने को
ठगा जाना नहीं मानते।

कौन ठग रहा है
पहचानना है।
कठिन है हालाँकि,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आज सबकी निगाहें तुम पर हैं,
तुम्हारे जवाब पर।

नहीं जानते
तुम्हें बार-बार
क्यूं गिना जा रहा है
तुम तरक्की के आखिरी गवाह हो
दरअसल।

तुम्हें गवाही देनी है
पर इसके पहिले
होशियार होना होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## ये मुर्गियाँ

ये मुर्गियाँ
चाहे जहाँ चुग लेती हैं,
देशी अंडे देती हैं
बड़ी कीमत है इनकी।

ये मुर्गियाँ
सैकड़ों बल्ब की रोशनी में रहती हैं,
अंग्रेजी चारा खाती हैं
अंडे देती हैं/सस्ती।

सैकड़ों बल्ब की रोशनी से
चुंधिया गई हैं
मुर्गियों की आँखें

सैकड़ों बल्ब की रोशनी से
चुंधिया गई हैं
हमारी आँखें।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## जमाना बदल गया है

गिनती कर लीजिए,
गुलामी की परिभाषाएं
आजादी से कम न होंगी।
प्रेमलाल जी
आजादी-गुलामी की परिभाषा
आप बताते हैं
उसके अपने मिजाज हैं।

कस्बे का कार्यालय,
प्रमुख का दफ्तर,
एक बड़ी भारी टेबल,
टेबल पर हाथ घंटी

टेबिल पर रखी घंटी को पंजे से
इस तरह बजाते, प्रेमलाल जी
कि
टेबिल और घंटी दोनों
साथ साथ बज उठते

टेबिल और घंटी की
धमाकेदार आवाज को
जानता था दीनू
गमछा से माथा पोंछता

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आ खड़ा होता
''जी सरकार''।

''तुम इस घंटी के गुलाम हो ''
लगभग लाल होते, प्रेमलाल जी
दीनू को देखते

जान लेता दीनू
प्रेमलाल जी के
इस रहस्यमयी अंदाज को
हँस देता एक 'गंभीर हँसी'

हँसते हँसते कहता
''जी सरकार''

स्टील की कटोरी वाली घंटी
हाथ में लेकर
उलटते-पलटते
सचमुच रहस्यमयी ढंग से
देखते प्रेमलाल जी,
बुड़बुड़ाते
'किसने बनाई यह घंटी,
इस घंटी के भीतर
एक खतरनाक आवाज है
'मैं तुम्हें काका कहता हूँ'
आत्मीय ढंग से
भीतर बुलाना चाहता हूँ
पर यह घंटी है कि
जैसे अंग्रेज अफसर ने बजाई हो
बजती है घंटी घन्न

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

वांकई चौंक जाता दीनू काका,
लगभग अपने को घसीटता
भीतर आ लपकता
'जी सरकार'।

प्रेमलाल जी का पंजा
इतना मजबूत है कहता दीनू
किसी दिन टूट न जाए
'स्टेट टाईम' का
पुराना टेबल।

प्रेमलाल जी का
यह गुस्सा
जाने-अनजाने
स्टेट टाईम की टेबिल पर भी
होता
स्टेट टाईम पर भी।

गुलामी के नाम पर
प्रेमलाल जी की
साईकिल याद आती है
जब वे आफिस से निकलते,
दीनू काका से कहते
'मैं इस साईकिल का
गुलाम नहीं।
दीनू काका हँस देते
एक 'गंभीर' हँसी।

प्रेमलाल जी का
साईकिल के प्रति गुस्सा


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

टेबिल और घंटी के प्रति
गुस्से से मेल खाता था।

प्रेमलाल जी
मूलत: आप किसान थे,
सेवा निवृत्ति के बाद
करते हैं किसानी
आते हैं कभी-कभी
आवेदन लेकर
इसी दफ्तर में।

दफ्तर में बड़ी शांति है,
कहीं कोई शोर नहीं

साहब शांत हैं
जब वे घंटी बजाते हैं,
घंटी के साथ टेबिल की आवाज
जरा भी नहीं आती
हल्की सी इस सुरीली आवाज पर
सरपट आ खड़ा होता है
'जैसे दीनू काका ही आ गए हों
यह दीनू काका नहीं
अनुकंपा नियुक्ति पर उसका पुत्र है
'यस सर'।

''यह ऊपर झालने वाला पंखा है
देख रहे हो?'' कहते हैं साहब,
कहते हैं साहब बड़ी शांति से
''क्यों लगा है यह?
खाली बैठने का लेते हो वेतन,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कम से कम इसी को चलाया करो''
''प्रेमलाल जी
जाइए घर,
ले जाइए अपने मिजाज,
ले जाइए गुलामी की अपनी परिभाषा
आपके जमाने की है
अब जमाना बदल गया है।''

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# एक ट्रक सामान और
# विनोद कुमार शुक्ल की किताब

एक ट्रक,
चढ़ रहा था सामान उस पर, ट्रांसफर का सामान।
सिर्फ चार पतले हाथ
और थोड़ा पसीना
काम पर लगा था,
रफ कापियाँ बच्चों की
सामने-सामने उड़ रही थीं,
खाली शीशियाँ बेतरतीब,
बिक जाने से बचा
एक बंडल न्यूज़ पेपर।

सड़क की क्वालिटी, गड्ढे
और भ्रष्टाचार को
एक साथ जोड़ रहा था
ट्रक ड्राईवर बार-बार।

मिट्ठू कभी रहा नहीं
मेरे सामान में
वर्ना कुली बताते
मिट्ठू का पिंजरा यहाँ रखा जाता है।

चार बड़े कमरों और

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

बरामदों का पूरा सामान
सिर्फ एक ट्रक में

घर में एक ट्रक हो
फिर क्या

मिट्टी ढोता ट्रक कभी लगा नहीं
इतना बड़ा

पूरा सामान चढ़वाकर
खाली घर के सभी कमरों में
घूमता है ट्रक ड्राईवर,
"बस इत्ता सामान"?
जैसे कह रहा हो
कहिए तो समेट लूँ छत, दीवार भी

यहाँ से निकल
नाके पर चुपचाप खड़ा रहेगा सामान
आज मिली है जो छुट्टी
बर्तन खूब बतियाएँगे।

सभी कमरों में
लग गई है झाड़ू
"बची तो नहीं कोई चीज"
की तर्ज पर।
मानता नहीं मन फिर भी
कहीं छूट न गया हो
विनोद कुमार शुक्ल की किताब
"वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर
चला गया विचार की तरह"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

हाथ पर ही रख लिया होता उसे
कुछ और आ जाता हाथ में तो
जरूर रख लेता
पास का पहाड़,
आँगन, पीछे की बाड़ी।
'क्या-क्या रखोगे' झल्लाती है पत्नी
एक फासले का एहसास देती है
इस समय निकालते हुए
पुराने कपड़े, बर्तन, आचार, बड़ी
नौकर-चाकर के लिए
उनके बच्चों के लिए।

सुबह चाय के साथ
पढ़ा था समाचार/हेड लाईन
भूल गया था।

खाली घर गूँजता है,
मेरी अपनी आवाज गूँजती है,
चिड़ियाँ मानो कुछ और तेज चिचियाती हैं,

चूहे; उसके बच्चे
ढूँढ रहे होते हैं अपने ठौर,
एक छिपकली तलाश रही है आड़

कुछ पूछते लग रहे हैं
सब के सब।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# अंकलहा, दुकालू, लेड़गा

अंकलहा, दुकालू, लेड़गा,
खोरहा,
कचरा,
नाम है या टोटका
जो रख दिया काका ने
पड़ोसी ने
'नाम'
पुकराते रहिए जीवन भर,
बनती रहेगी एक ध्वनि
एक निश्चित कंपन आसपास

अच्छा या बुरा कोई नाम नहीं
ध्वनि सबकी अलग-अलग।

पूछिए
किसने रखा तुम्हारा यह नाम
निश्छल हँसी हँस देता लेड़गा।

पहाड़ से
पहाड़ का एहसास होता है,
ठंड से होता है 'ठंड' का एहसा़स,
मीठे से मीठे का।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शब्दों को तौलने का
या इस तरह महसूसने का
नहीं है उपकरण,
कौन जाने
तौल-तौल कर रखे गए हैं सबके नाम,
छू-छू कर, चख-चख कर
कि वाकई पहाड़ को कह दें चींटी
उपद्रव हो जाए

जमाने से
पहाड़ को पहाड़ कहा जा रहा है,
नदी को नदी
आवरण बन गया है मानो
पहाड़ पर,
पूरी तरह चार्ज़ हो गया है वह
अपने नाम से

चला आ रहा है
खोरबहरा, भोकवा,
लंगड़ा

अपने से अपना ली गई है
खुद के हिस्से की आवृत्ति

इस आवरण में रहते हैं
पहाड़ पार, दूर गाँव में
जंगल में लोग।

दर असल परिवर्तन की लकीर ने
कराया है एक
एहसास

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जाइए पहाड़ पार
प्रकाश,
पूनम,
नेहा,
हिना, मिलेंगे
समीर मिलेगा
राजेश, रेखा मिलेंगे

नाम की ललक है,
किसी की बपौती तो नहीं

काश्मीर रखा है एक बच्चे का नाम
अमरीका भी

क्या कर लीजिएगा

जैसे मिल गया है एक "खजाना"

जहाँ नहीं पहुँचे हैं ये नाम,
मुझे लगता है
एक पिटारा लेकर जाऊँ वहाँ,
जल्दी छोड़ आऊँ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## अद्‌भुत छुअन

वह कौन सी थी
अद्‌भुत छुअन,
गुम गया मैं पता नहीं कहाँ।

गुनगुने छुअन को सब
लेते और छोड़ते थे साँस में।

मैं एक गहरी साँस लेता कि
ढूँढ लिया गया।
तब से अब
सपनों में भी ढूँढा बहुत
वह बस्ती नहीं मिली।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# ये लड़कियाँ

लड़कियाँ यहाँ पढ़ती हैं
जंगल ही जंगल हैं,
पहाड़ ही पहाड़ हैं

गाँव-गाँव की लड़कियाँ,
पहाड़ पार की लड़कियाँ।

पहाड़ के ऊपर से दिखता है
यह भवन
शाला का भवन
दिखते नहीं हैं रास्ते
कहाँ से जाती हैं लड़कियाँ ?

छुट्टी हुई है स्कूल की
बिखर रही हैं लड़कियाँ
झक सफेद ड्रेस में लड़कियाँ
कहाँ से जाएँगी पहाड़ पार ?
यह जो सफेदी है स्कूल के पास
फैल जाएगा पहाड़ पर,
उजला हो जाएगा पहाड़।

बिखर गई लड़कियाँ,
गायब हो गई लड़कियाँ,
कहाँ गई सफेदी ?····


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

पहाड़ तो पहाड़ हैं,
पहाड़ बहुत ऊँचे हैं
स्कूल बहुत छोटा है

नजर जा रही जहाँ तक
पहाड़ ही पहाड़ हैं,
लड़कियाँ बहुत कम हैं

अभी निकल गई लड़कियाँ…
वीरान हो गया जंगल

कहाँ गईं लड़कियाँ,
चुपचाप लड़कियाँ

एक दिन
पहाड़ होंगे,
स्कूल होगा,
बौने लगेंगे पहाड़
जब लड़कियों की छुट्टी होगी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## भयभीत हूँ

भयभीत हूँ मैं
इस शहर से
एक दुकान की सीमा जहाँ होती है खत्म
दूसरी हो जाती है वहीं से शुरू।
और तो और
दुकान की तरह सजे हैं
सबके ड्राइंग रूम।

झक सफेद कपड़ों में
जहाँ कभी
मिला करते थे
गांधीवादी,
वहीं 'गांधी एम्पोरियम' के नाम से
एक दुकान है
एयर कंडीशन्ड,
कांच ही कांच चारों तरफ,
पारदर्शी/एकदम पारदर्शी
खादी की तरह पारदर्शी नहीं,
कुछ नहीं होने की तरह
पारदर्शी।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## उद्योग आ रहा है

उद्योग आ रहा है,
उद्योग आ रहा है

गाँव के बच्चे
सड़क किनारे तक
आ-आ कर
दूर तक देखते हैं,
''उद्योग आ रहा है,
उद्योग आ रहा है''
शोर मचा रहे हैं।

कुछ बड़े बच्चे
और कुछ स्त्रियाँ हँस रही हैं
''उद्योग कोई सड़क से आता है''।

एक बुजुर्ग, जिसे कम दिखता है,
कम सुनता है,
कहता है ''तो का आसमान से आता है''
''हाँ''
''आसमान से''
तब तो गिरता है खेत पर
घर आँगन पर
नहीं तो

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

निकल जाता
सड़क-सड़क

"सड़क-सड़क"
बड़बड़ाता है बुजुर्ग
और खाँसता है
"सड़क-सड़क"

उद्योग/उद्योग न हुआ
मोटर-गाड़ी हो गया।

बच्चे तो बच्चे हैं
उनके लिए खेल बन गया है
उद्योग।

पंचायत में
जमा हैं लोग-बाग,
उद्योग को लेकर
घमासान मचा है

कुछ की, जा रही है खेत
उन्हें दिख रहा है
मानों अँधेरे में लिखा जा रहा है
पीला अक्षर

कहा जा रहा है बैठक में
पीले अक्षर से
गाँव का अंधकार दूर हो जाएगा

सड़क यहाँ से
चला जाएगा वहाँ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

यहाँ होगा 'यह'
वहाँ होगा 'वह'।

बच्चे और बूढ़े हैरान है।

स्त्रियाँ घर में बातें कर रहीं
"और पनघट?
वह जामुन?"

"उद्योग न हुआ
क्रोकोडाईल हो गया
सबको लील जाएगा"
खखारता है बुजुर्ग
खाँसता है।

चमचमाती कार आती है
लाल-पीली बत्तियाँ।

"आ गया,
आ गया"
बच्चे चिल्लाते हैं।

माइक पर एनाउंसमेंट शुरू हो गया है
"मुख्य अतिथि पधार चुके हैं"
इस तरह आता है उद्योग
बुजुर्ग कहता है

बुजुर्ग को देखती हैं स्त्रियाँ
हँस देती हैं
मुँह छिपाकर।

"सफेद मूसली, लेमन ग्रास, बच्छ

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जानते हैं क्या होता है ?
इन्हें लगाना है
और काटना है खुशियाँ ही खुशियाँ
आनंद ही आनंद।"

"अब तक
बोते रहे गरीबी
काटते रहे दुःख-दर्द"।

"क्या खुद खाएँ
क्या खेत को खिलाएँ"
एक किसान कहता!
"सरकार आए, सरकार बोए
सब्सीडी-वब्सीडी"?

"मूसली बोएँगे
तो खाएँगे क्या?"

"यह खेती है
या उद्योग?"

"तो का उद्योग में
खेत रहेगा वहीं का वहीं"?

"रास्ता, चौपाल, पनघट··· ?

"तो का उद्योग हुआ,
न दफ्तर न गाड़ी"

"का चपरासी का भी पद
न खुलेगा"?


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

देश में,
विदेश में
दवाई बनाने
उगाई जा रही है औषधि फसल
मालिक बने हैं किसान।

बच्चे अब बैठे
सुस्ता रहे हैं।

कुछ और बड़े बच्चे
और स्त्रियाँ
सब ध्यान से सुन रहे हैं।

घमासान बंद है
माइक से एनाउंसमेंट हो रहा है

उद्योग आ रहा है,
उद्योग आ रहा है।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# मेरे हिस्से का आसमान

छत से देखता
दूर
दिखते पहाड़
बड़े-बड़े झाड़
दूर से दिखते
बहुत छोटे,
बड़े होने का प्रमाण देते
देखता और खो जाता
स्मृतियाँ कर आतीं
एक लम्बी यात्रा,
कभी सुस्ता लेती पहाड़ पर/झाड़ पर।

एक दिन दिखा नहीं पहाड़,
अट्टालिकाएँ खड़ी थीं सामने
"हम हैं" की मुद्रा में।

अपने हिस्से की जमीन के बराबर
आसमान का सिर्फ एक टुकड़ा
देख सकता था अब मैं
अपनी छत से।

मैंने स्मृतियों को
पहाड़ बना दिया है
और आसमान को पंछी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## बड़ा बाबू

आज सूरज की
एक किरण
एक सेकंड विलंब से पहुँची
पृथ्वी पर
मैंने कोई आपत्ति नहीं की

वनस्पति में
हो गया
क्लोरोफिल थोड़ा कम

''तो क्या हुआ''

सब चिड़िया आज
चुप हैं

''मुझे क्या लेना-देना
इन सबसे''

दफ्तर में बड़ा बाबू आज
लेट है

''यह क्या तमाशा है''।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# दमक जाता है चेहरा

एक किसान
सुबह सुबह हल को छूता है,
देखता है हल में खेत

एक शिकारी
सुबह सुबह तीर की फलक को देखते हुए
उसके भीतर शिकार को देखता है

लकड़हारा
कुल्हाड़ी को कंधे पर डालने के पहिले
अपने अंगूठे को लगाता है
फल की धार पर,
एक कटे झाड़ को देखता है।

दमक जाता है
किसान का चेहरा

दमक जाता है
शिकारी/लकड़हारे का चेहरा।

वह कोई और है,
वह किसान नहीं, शिकारी नहीं
लकड़हारा नहीं।

वह घर से निकलते हुए
आईना देखता है।


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# बकरी चराने वाला बच्चा

साँवला-सा
जंगल का बकरी चराने वाला बच्चा।

साँवला बच्चा
एक जंगल का नहीं,
एक गाँव का नहीं।
नाम नहीं,
एक सार्वजनिक संबोधन।

इस संबोधन से खुश है
बकरी चराने वाला बच्चा।

साँवला कहे जाने पर
उसे आपत्ति नहीं

'साँवला'
उसे व्यक्तिगत संबोधन का
एहसास देता है
जैसे वह बकरियों को कहता है
'काली' 'भूरी'।

आप उसे साँवला कहें
वह पीले दाँत दिखा देता है

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जैसे कह रहा हो
पीला भी संबोधन हो सकता है
उसके लिए।

धारदार बड़ी-बड़ी सींगों वाली
बकरियाँ
गुस्सैल, माथा लड़ाती
ढेर-ढेर बकरियाँ।

कहाँ लगता है
वह बकरी चराने वाला बच्चा
इन बातों पर
वह बकरियों-सा हँस देता है।

अनुशासित चलती हैं, इशारे समझती हैं।
एक पतले डंडे से डरती हैं
बकरियाँ।

झाड़ के शिखर पर चढ़ गया है बच्चा,
देखता है बकरियों को
आगे निकल गई हैं बकरियाँ।
दूर तक दिखता है जंगल,
कोयल की सुनता है कू-कू,
भूल जाता है कुछ देर के लिए सब कुछ,
भूल जाता है मुखिया का आदेश,
भूल जाता है
बहुत आगे निकल गई हैं बकरियाँ,
याद आ जाता है
शहर की मोटर-गाड़ियाँ,
बाबू साहब और गोरी-गोरी मेम
और न जाने क्या क्या

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

सोच में गुमसुम बच्चा
देखता है हरी-हरी पत्तियाँ
याद आती हैं उसे बकरियाँ।
दौड़ता है बकरियों के पीछे,
दौड़ता है सरपट

जैसे
इस वक्त हुआ नहीं
अगर
बकरियों के पीछे
तो
वह
वक्त से पीछे हो जाएगा।

आगे निकल जाएँगी बकरियाँ
तो निकल जाएगा वक्त।



CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## इनके रास्ते

आप जो फैसला करते हैं
क्या कभी इनके पक्ष में करते हैं ?
क्योंकि आपके फैसले में
ये कभी वास्तविक पक्षकार
नहीं होते हैं

दरअसल कोई रास्ता
इनके घरों की ओर
नहीं जाता।

बेशक ये बाजार जाते हैं हफ्ता-हफ्ता,
इनके अपने रास्ते हैं
हम-आप इन्हें जानना नहीं चाहते,
इनके रास्तों को जानना
कठिन जो है।

चौड़ी सड़कों को
गिट्टी, मुरूम, सीमेंट, डामर, को
हम रास्ता कहते हैं

बोलचाल में ये भी
इसे ही रास्ता कहते हैं
पर, इस पर चलते नहीं


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

जबरदस्ती थोड़े है,
वे अपने रास्ते जाते हैं बाजार
हफ्ता-हफ्ता

रास्ते पर पड़ता है पहाड़
चढ़ जाते हैं,
नदी है रास्ते पर
पार कर लेते हैं

ये जानते हैं
जहाँ ये चल रहे इनकी उम्र बढ़ रही है,
और लोग जहाँ चल रहे हैं
उनकी उम्र बढ़ रही है
किसी की नहीं रुकी उम्र,
कोई दो उम्र नहीं जिया।

हाँ तो बात चल रही थी रास्ते की,
गिट्टी-मुरूम वाले रास्ते की।

कुछ लोगों को तैयार किया है
इस पर चलने के लिए
चलने का क्या मिलेगा?
पूछते हैं।
एक बार तो तैयार भी हो जाते हैं
तर्ज यह कि "रास्ता बना है तो
चलना पड़ेगा।"

रास्ते में पुलिए बन गए हैं,
प्याऊ भी
ढाबे और ठेले जगह-जगह।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

गाड़ियाँ आने लगी हैं,
जाने लगी हैं।

ये हफ्ता का बाजार जाते हैं,
अब भी
पहाड़ चढ़ते हैं
और तब ही लगता है इन्हें
बाजार। बाजार की तरह।

बाजार में बर्फ के गोले का आनंद है,
पान खाने का मजा है,
रहचुली है बाजार में
वैसे ही पहाड़ है,
पहाड़ चढ़ने का मजा है।

क्या कीजिएगा?
विकास करना है,
पहाड़ पर कीजिएगा
ध्यान रहे
कहीं ये बदल न दें
हफ्ता का बाजार जाने का रास्ता।


-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# पहाड़/हाथी/चाँद/मामा

मैं इस रास्ते जब भी गुजरता हूँ
पहाड़ पर/बड़े-बड़े काले चट्टानों पर
नजरें चली जाती हैं

मैं देखता हूँ
शिखर पर टिका हुआ
एक बड़ा टीला

एक छोटा बच्चा
टीले पर खड़ा है

बच्चा और छोटा लग रहा है
क्योंकि वह ऊँचाई पर है,
क्योंकि पहाड़ के मुकाबले
बहुत छोटा है

बैठ गया है बच्चा...
जैसे हाथी के पीठ पर बैठ गया है

अब मुझे पहाड़
पहाड़ नहीं, हाथी लग रहा है।

पहाड़ पर बैठा बच्चा
चाँद को पुकारता है 'मामा'।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

मैं चाँद को देखता हूँ
मैंने चाहा क्षण भर के लिए
चाँद मुझे भी दिखे मामा।

पहाड़ मुझे दिख सकता है हाथी,
चाँद नहीं दिखा मामा,
क्यूँ ?

'मामा' की बात पर
मैं स्मरण करता हूँ एक दृश्य
निपट जंगल गाँव,
गाँव में बाजार,
बाजार में एक दुकान,
दुकान में ग्राहकों की भीड़,
ग्राहकों की जुबान पर
मामा यह दो/मामा वह दो
मामा चिल्हर नहीं,
मामा....मामा....मामा.... ?
मेरी जुबान ने भी तब आवाज दी थी
'मामा'

मैंने देखा फिर से जो
चाँद को
वह मुस्कुरा रहा था

मुझे चाँद दुकानदार नजर आ रहा था।
जैसे दिख रहा था पहाड़
हाथी।


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## आसमान बंद है

आसमान बंद है,
कभी भी फट सकती है धरती
दिशाओं से नहीं थी उम्मीद
कि साजिश में
शामिल हो जाएँगी वे भी

हवाओं को कौन कहे
किधर बहे।

खुशियाँ लेकर उड़ा था विमान
खबर बन गया।

एक-एक साँस खबर बन गई
कंधार में,
एक-एक लम्हें
आतंकवादियों की गिरफ्त में।

छोटे से विमानीय देश के मुकाबले
पूरा देश बाहर है,
गिरफ्त से बाहर
जो महसूस करने लगा है
अपने ऊपर
एक विमानीय छत।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

एक पुत्री कहती है
पिता नहीं देश है विमान में।

आशा भरी नजरें
आसमान की ओर टिकी हैं
"एक खिड़की खुलेगी
आसमान में,
संभावनाएँ उतरेंगी"।
बदल देगी भाप को
असल साँस में
एक पुत्री का देश
फिर पिता बन जाएगा।


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# उधार के एक हजार

एक हजार रुपए
जो उधार के लिए थे,
ये बीस बरस जैसे बीस जुग।
याद है मुझे एक हजार
इस कदर याद है कि
भुलाने पर भी
नहीं भूल पा रहा हूँ,
हरे-हरे नोट, जो लिए थे
वही नोट मैं करना चाहता हूँ वापस,
कहाँ से लाऊँ,
वे नोट तो चलन में नहीं
जो चलन में है
उन्हें लौटाते हुए
मुझे उधार लौटाने जैसा
बिल्कुल नहीं लगेगा।

मेरे मित्र ने दिए थे
एक हजार
अपनी जरूरत से निकालकर।
उसकी जरूरत थी उस वक्त
"जाड़ा में दूध के साथ बादाम,

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

प्रतिदिन का च्यवनप्राश,
खरीदना गर्म कपड़े और
एक अदद साईकिल
अलावा इसके
परिवार के साथ
गर्मी में
ठंडे स्थान की यात्रा''
जो उसने नहीं की
और झट एक हजार रुपए
दे दिए थे निकाल कर।
मैं न तो
उस वक्त के चलन नोट
लौटा सकता
न ही वह वक्त।

सोचता हूँ
क्या लौटाऊँ
जो मेरे पास है
और मुझे लगे कि
लौटा दिए
एक हजार, अभी के नहीं
तब के।

क्या है मेरे पास?
बादाम, च्यवनप्राश तो क्या
बाजार की कोई चीज
उस जमाने सी शुद्ध नहीं,
साईकिल का तो
जमाना ही नहीं रहा, और


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

ठंडे स्थानों में
आतंक छाया हुआ है इस तरह
कि⋯।

न, मैं न लौटाऊँ
इस तरह एक हजार।

एक व्यापारी मित्र ने
सुझाया मुझे 'ब्याज'
अच्छा नहीं लगा।

अपनी दिनचर्या में से ही
कुछ निकाल कर वक्त
दे दूँ,
यह सोचते हुए
मैं थका-थका लगता हूँ
वह कितना इत्मीनान का वक्त था
और यह⋯?

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# एक चिड़िया दरवाजा खटखटाती है

मेरे पास वह सब कुछ है

वह सब कुछ
जो मेरे ज्ञान में है,

दो कमरों का मकान
उसके भीतर सब कुछ
एक ही स्क्रीन में सारा कुछ
पूरी दुनिया है उस पार।

क्या हुआ कि मैं तैरना नहीं जानता
ठीक इस दूरी पर है स्विमिंग पुल

बाहर लॉन है, धूप है लॉन पर,
सारी व्यवस्था है बाहर
बस टाईम नहीं

नान वेज बिलकुल नहीं चलता
शक्कर मना है,
घी, तेल, मिर्च, मसाला
मैंने ही कम कर दिया वर्ना
सजा है उस पार
डायनिंग टेबिल।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

क्या हुआ कि मुझे उड़ना नहीं आता
पूरा आकाश है मेरे पास,
एक चिड़िया है
जो रहती है साथ-साथ
सुबह से बिना नागा
लगातार करती रहती है
स्क्रीन पर चोंच से
टुक-टुक
जैसे कह रही हो "खोलो",
जैसे वह मुझे बता रही हो
यह बंद दरवाजा है सिर्फ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# यह चार चक्कों का रथ है

यह चार चक्कों का रथ है,
यह छः चक्कों का,
यह बड़ा रथ है,
यह छोटा रथ है
यह रथ है पौराणिक
परिक्रमा के नियम हैं

चक्के हैं विशेष
सिर्फ एक लकड़ी से बनते हैं,
न जोड़ न तोड़
तय है किस जंगल से लाई जाएगी लकड़ी,
कौन इसे लाएगा
कांधे पर रख,
कौन लोग बनाएँगे रथ।

राजा तो राजा थे,
इनके लिए तय था
रथारूढ़ होना,
जनता को दर्शन देना
एक वर्ष में एक बार।

एक गाँव के जिम्मे था
रथ-खींचना।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कहते हैं
बड़े
नटखट थे
गाँव के लोग
गांव के चेहरे पर
छिपा होता कहीं न कहीं
आक्रोश

राजा के पूरे वर्ष के मुकाबले था
इनका एक दिन।

राजा बाँटते शराब, चावल, बकरा।
नियम था
रथारूढ़ होना राजा का,
नियम था शराब, चावल, बकरा।

न राजा है अब,
न राजपाट
रथ के नियम हैं वही के वही
शराब, चावल, बकरा
वह पूरा गाँव नटखट।


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# पाँच मिनट छुट्टी बिताने के लिए

पाँच मिनट,
आपका सिर्फ पाँच मिनट चाहिए मुझे
आपके निहायत व्यक्तिगत समय में से
छुट्टी मनाने जैसा लगता हो,
उसमें से पाँच मिनट।
कहीं ऐसा न हो कि
मैं मिलूँ और
आप ही वहाँ अनुपस्थित हों।
आज तो लोग
सामने खड़े-खड़े क्षण भर में कई बार
अपना स्थान छोड़ देते हैं
पहुँच जाते हैं कहाँ से कहाँ
गुम हो जाते हैं कहीं
और खुद ढूँढने भी चल देते हैं
यह गुमना और ढूँढना
फैशन में शामिल हो गया लगता है
सामने खड़ा-खड़ा मैं इंतज़ार करता
थक जाता हूँ,
कभी दूसरा काम निबटा आता हूँ
कभी दरवाजा खटखटाने की तरह
कहता हूँ हैलो···।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

कभी अपने को बौना भी
समझने लगता हूँ
क्योंकि मुझे यूँ
जल्दी-जल्दी गुमना-भटकना
और ढूँढने निकल जाना नहीं आता।
यह शान की बात हो सकती है
पर मुझे जो चाहिए आपका पाँच मिनट, उसमें आपकी
पूरी उपस्थिति होनी चाहिए
वह आप बहुत थोड़े प्रयास से
निकाल सकते हैं मेरे लिए।
इस समय को लेकर मैं गंभीर हूँ
क्या आप बिताते हैं कुछ समय
अपने पालतू जानवरों के साथ, क्या उनसे बतियाते हैं?
अपने आंगन के गुलाब को रुककर मिनट दो मिनट
तो निहारते ही होंगे,
उसके बढ़ने को इस तरह आपने जरूर महसूस किया होगा,
नई-नई कोंपलें मुस्काई हों और
आपने जान लिया होगा।
कभी एक टेडी बियर ने कराया हो
आपको समीपता का एहसास क्या ऐसा कभी हुआ है?
यहीं कहीं छिपा-छिपाई खेल रहा है
वह समय जो मुझे चाहिए।

कभी वह कविता की पंक्ति में जाकर छिप जाता है,
कभी किसी चित्रकार के चित्र की
गहराई बन जाता है।
कभी वह सारे रंगों के पहले खड़ा हो जाता है तनकर
तो बहुत देर तक कभी


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

शास्त्रीय संगीत में लम्बे आलाप के बाद मौजूद रहता है
कभी तो तकता हुआ
वह निकाल लेता है अपने को साफ,
कभी बन जाता है
एक खिलाड़ी का
उसकी दौड़ में जीत के लिए
एक जरूरी कदम।

क्या आपके पास
सेकंड दो सेकंड हैं ?
जो तितलियों के पास है।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# फसल की तैयारी है

साल के साल
धान की जब आती फसल
पहली बार टूटते आँवले, मुनगे,
बेर, आम
त्यौहार मनाते गाँव वाले एक साथ,
नवाखनी करते, गाँव बनाते।
केला पत्ते का मंडप
घर-घर के चौखट में तोरन, आम के पत्तों का।

हतप्रभ थे सब के सब,
खेतों में पता नहीं कौन-सा बोया गया था
बीज,
उग आया खेत भर अत्याधुनिक इलेक्ट्रानिक्स
का कीमती जंगल।
घर में, आँगन में एक तरह की खुशी थी
दुखी था तो राम्हे,
वह बनाता था लक्ष्मी
घर की धान से।
कैसे गूँथेगा बाली,
कहाँ से लाएगा धान,
कहाँ मिलेगा आँवले का गुच्छा,



CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

आम-केले के पत्ते।
जब तक वह इन्हें खरीदने
पहुँचेगा शहर की दुकान,
वहाँ शायद इनकी दुकान भी न हो।
पढ़ा था अखबार में उसने
सुबह सुबह
''विदेशों में बड़ी तेजी से
बनाए जा रहे हैं खेत
वहाँ धान, आँवला, आम, बेर,
लगाने की तैयारी है।''


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# पूरी हो गई बात

मैंने यूँ ही समझ लिया,
मेरी पूरी हो गई बात
मैं भरोसा करता हूँ
कि मैं पूरी बात करता हूँ
क्योंकि न किसी ने शिकायत की,
न आपत्ति।
मैं मानता हूँ, सब मानते हैं।
पूरी बात कर मैं चुप होता हूँ,
चुप होता हूँ, भूल जाता हूँ,
चुप होते ही
चहकी थी एक चिड़िया,
खड़खड़ाया था एक पत्ता,
लौट कर आई थी प्रतिध्वनि
सामने पहाड़ से टकरा कर।


CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## तब और अब

अब काँधे के ऊपर का
रहा नहीं काम।

दुखते थे हाथ कभी
'खुश रहो'
कहते।


CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

## काला-पीला

ए.सी. कार में
सवार वह
तेजी से
दौड़ रहा है
बंद हैं ए.सी. कार के शीशे
नीले रंग के जिलेटिन चढ़े शीशे
सब ओर दिख रहा है
नीला-नीला,
जैसे सब कुछ हो गया है
आसमान मय,
समुद्र हो गया है जैसे सब कुछ।
वह गोरा व्यक्ति
उसकी नसें
नीली दिख रही हैं
उसके भीतर बह रहा खून तक
दिख रहा है नीला
पूरे समय को वह
नीलेपन में बदलते हुए
देख रहा है।
घोर आश्चर्य
काला-पीला

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

नहीं हुआ नीला,
या बैंगनी-हरा
वैज्ञानिक सिद्धांतों के विपरीत
वह दिखता रहा
काला-पीला
क्योंकि शायद
सब के सब हैं
इसके होने के लिए जवाबदार
क्योंकि
उसे वोट मिले हैं इस तरह
कि वह दिख सकता है
वैसा का वैसा।

पता नहीं क्यूँ वह यह सब
देखकर अनदेखा
करता जा रहा था
कर भी क्या सकता था
काला-पीला था जहाँ
स्मारक की तरह सजा हुआ था।

वह देख रहा था
काला-पीला यहाँ-वहाँ
वह देख रहा था
नीले आसमान का विस्तार था
तब भी उतना ही,
और समुद्र था
उतना ही नीला।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

# चिड़ियों की खुशी के मुकाबले

ठीक उसके जीवन की
उस लौ की तरह
जिसमें चेहरे पर पड़ी झुर्रियाँ
कभी तेज, कभी मद्धम
कभी शांत।
कभी शोर के मुकाबले
वह सुनता है कान लगाकर
अपने दिल की धड़कन।

हर रास्ते पर चलते हुए
पृथ्वी की गति का
अंदाज रहता है उसे
फिर भी कभी तेज कभी मद्धम को
महसूसता है कहीं न कहीं
अपने भीतर।

इसी मद्धम को, इस तेज को
शामिल कर लिया है
अपनी दिनचर्या में

कुछ इस तरह कि
नहीं रहा उसके भीतर

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

"भला मेरी शापिंग और
उसकी शापिंग में अंतर क्यूँ"
यह सब क्या कुछ है
चिड़ियों की खुशी के मुकाबले
यह मद्धम, यह तेज एक दिन
हुई जाती है फुर्र।

मैं बार-बार आ जाता हूँ चिड़ियों पर
जैसे वह चिड़िया बार-बार
उड़ कर आ बैठती है
इस डाल पर।

❑❑

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

*(पिछले फ्लैप से आगे)*

*आप जो फैसला करते हैं*
*क्या कभी इनके पक्ष में करते हैं ?*
*क्योंकि आपके फैसले में*
*ये कभी वास्तविक पक्षकार नहीं होते।*
*दर असल कोई रास्ता*
*इनके घरों की ओर नहीं जाता…*

ऐसे समय में जबकि संवेदना व कला के क्षेत्र में अपसंस्कृति व बाजारवाद का हमला तेज हुआ है और कविता कर्म पहले से भी कठिन तब अपनी संवेदनात्मक ताप व सांस्कृतिक-बोध के साथ रचनात्मक हस्तक्षेप करती हुई संग्रह की यह कविता कला-जगत में अपनी कहीं हल्की सी कौंध पैदा करेगी, तो कहीं बढ़ती चुप्पी के खिलाफ पत्ती के डोलने-सा कंपन। कहीं रंगहीन होते लोगों के बीच रंग की सार्थकता को रेखांकित करेगी, तो कहीं बढ़ते अकेलेपन के बरक्स सामूहिकता की मद्धम-सी थाप अपनी देगी यह उम्मीद की जा सकती है।

**—रजत कृष्ण**

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College of Education Bantalab Jammu

संजीव बख्शी का जन्म 25 दिसम्बर 1952 को छत्तीसगढ़ के खैरागढ़ जिला राजनांदगाँव में हुआ। वे गणित में एम०एस-सी० हैं। इनका पहला कविता संग्रह 'तार को आ गई हल्की सी हँसी' 1994 में एवं दूसरा 'भित्ति पर बैठे लोग' 1999 में प्रकाशित हुआ। इन्हें वर्ष 2002 में स्व० ठाकुर पूरन सिंह स्मृति सूत्र सम्मान से सम्मानित किया गया।

**सम्पर्क**

आर-5, सेक्टर-2, अवंती विहार कॉलोनी, पो०
रविग्राम, रायपुर (छत्तीसगढ़)

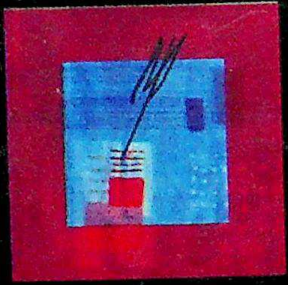

**मेधा बुक्स**

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032